M.A. Pre-
1st Paper

भाषा की परिभाषा एवं उसका विकास पर प्रकाश डालें !

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। समाज में रहने के नाते उसे आपस में सर्वदा ही विचार-विनिमय करना पड़ता है। कभी वह शब्दों या वाक्यों द्वारा अपने आपको प्रकट करता है तो कभी सिर हिलाने से उसका काम चल जाता है। इसी तरह हाथ से संकेत, करतल-ध्वनि, खासना, मुँह बिचकाना तथा गहरी साँस लेना आदि अनेक प्रकार के साधनों से हमारे विचार-विनिमय का काम चलता है। अतः भाषा वह साधन है जिसके माध्यम से हम सोचते हैं तथा अपने विचारों को व्यक्त करते हैं।

भाषा की अनेक परिभाषाए दी गई है - ऐसे तो किसी वस्तु की परिभाषा देना बड़ा कठिन कार्य है। परिभाषा बनाते समय तीन दोषों से बचने की चेष्टा करनी होती है वे है- अव्याप्ति, अतिव्याप्ति, और असम्भव। भाषा शब्द संस्कृत की वह 'भाष' धातु से बना है जिसका अर्थ 'बोलना' या 'कहना'। अर्थात भाषा वह है जिसे बोला जाय।

प्लेटो ने सोफिस्ट में विचार और भाषा के संबंध में लिखते हुए कहा है कि विचार और भाषा में थोड़ा अन्तर है। विचार आत्मा की मूक या अध्वन्यात्मक बातचीत है पर वही जब ध्वन्यात्मक होकर होठों पर प्रकट होती है तो उसे भाषा की संज्ञा देते हैं। स्वीट के अनुसार ध्वन्यात्मक शब्दों द्वारा विचार को प्रकट करना ही भाषा है।

भाषा और विचार का अटूट संबंध है मनुष्य के मस्तिष्क में जब विचार उठे होंगे, तभी भाषा भी आयी होगी। अतः भाषा के विकास में निम्नलिखित तत्व सम्मिलित है

① आंगिक भाषा — विकासवाद के अनुसार मनुष्य भी एक दिन अन्य पशुओं की कोटि का ही जीव था अर्थात उसकी चेष्टाएँ पशुओं-जैसी ही होती थी। भाषा नाम की वस्तु उसे उपलब्ध नहीं थी और वह आंगिक चेष्टाओं या इंगितों की सहायता से अपनी बात अपनी योनि के दूसरे सदस्यों तक पहुँचाता था। भूख, प्यास, प्रेम, क्रोध आदि व्यक्त करने के लिए सिर, आँख, हाथ, पैर आदि की ही सांकेतिक चेष्टाओं से मनुष्य काम लेता रहा होगा। पशुओं में सामुदायिकता की जो सहज वृत्ति काम करती है वह आदि-मानव में भी रहा होगा इसतरह आंगिक चेष्टाओं से ही मनुष्य का जीवन योगक्षेम चलता होगा। उसकी आंगिक चेष्टाए ही अर्थबोधन का प्रारम्भिक रूप और इसी प्रकार भाषा का विकास का प्रथम सोपान है।

② **वाचिक भाषा** → भाषा के विकास में आंगिक भाषा से आगे बढ़कर वाचिक भाषा तक पहुँचना मानव-इतिहास की क्रान्तिकारी उपलब्धि थी। जहाँ आंगिक भाषा चुने-गिने स्थूल इंगितों तक ही सीमित थी, वहाँ वाचिक भाषा भाव एवं विचार के संप्रेषण की असीम सम्भावनाओं से सम्पन्न थी। मनुष्य की कृतियाँ भाषा की सहायता से सूक्ष्म-से सूक्ष्म और गूढ़ से गूढ़ बातें दूसरों तक पहुँचाने में समर्थ हो गया। उसके चिन्तन और विचार की परिधि इतनी विस्तृत हो गयी कि उसमें भूगोल, खगोल सभी की जानकारी हो गये। वाचिक भाषा का प्रयोग सूक्ष्म-से सूक्ष्म बौद्धिक अभिव्यंजना के लिए हो सकता था। उससे सूची भेद अंधकार में भी काम लिया जा सकता था। और अभिप्राय पूरी स्पष्टता से व्यक्त किया जा सकता था। उसके लिए प्रकाश की बिलकुल आवश्यकता नहीं थी। इसतरह भाषा के विकास में वाचिक भाषा का विशेष योगदान रहा है।

③ **लिखित भाषा** → साहित्य, विज्ञान, कला ~~क~~ ~~क्षेत्र~~ के क्षेत्र में मनुष्य की समस्त बौद्धिक उपलब्धियों का सबसे बड़ा आधार लिपि या भाषा का लिखित रूप है। वाचिक भाषा कान की भाषा थी; किन्तु लिपि के आविष्कार के बाद आँख की भी एक भाषा बन गयी जिसमें कान की कोई आवश्यता ही नहीं रही। अब तो लिपि का विकास नेत्र की सीमा पार कर गया है। लिपि के कारण ही हजारों वर्ष पहले आविर्भूत व्यास, वाल्मीकि, कालिदास आदि की रचनाएँ हमें उपलब्ध हैं। इसी प्रकार हजारों मील दूर के लेखकों और कवियों की कृतियाँ सहज ही हमारे सामने आ जाती है। भाषा के क्षेत्र में देश और काल के व्यवधान को मिटा देना लिपि की सब से बड़ी देन है। अतः भाषा के विकास में लिखित भाषा का का महत्वपूर्ण भूमिका रहा है।

④ **यांत्रिक भाषा** → आज बहुत बार इच्छा होती है कि अनेक विद्वानों के मुख से निकले हुए वाणी को सुन सके किन्तु लिपि उनके वाणी को सुनाने में असमर्थ है। भाषा की इस निर्जीवता को दूर करने के लिए यांत्रिक भाषा का प्रादुर्भाव हुआ। आज यांत्रिक के माध्यम से दिवंगत हुए महापुरुषों की वाणी ग्रामोफोन के माध्यम से सुन लेते हैं। यांत्रिक भाषा ने कई रूप धारण किये हैं जैसे ध्वनि की रक्षा और स्थापित्व का काम ग्रामोफोन-रेकर्ड से लिया जाता है अब यह काम टेप-रेकर्डर तथा कम्प्यूटर के माध्यम से भी लिया जाता है। अतः भाषा के विकास में यांत्रिक भाषा का महत्व अन्य से अधिक हो गया। इस प्रकार उपरोक्त सभी तत्व भाषा के विकास में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं।